International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 2||February, 2023 || PP.58-62

उच्च शिक्षा में महिलाओं की शिक्षा में सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण

डॉ० देवेंद्र कुमार दीक्षित

असिस्टेंट प्रोफेसर,
डिपार्टमेंट ऑफ़ बी एड सेठ फूल चंद बगला
पी० जी० कॉलेज हाथरस

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिद्ध है- 'नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति मातृ समोगुरु:'. इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में विद्या के समान क्षेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है।' यह बात पूरी तरह सच है। बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती है। बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार बन जाता है।शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बहुत सी समस्याओं को पुरुषों से नहीं कह सकने के कारण महिलाएं कठिनाई का सामना करती रहती हैं। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। आर्थिक विकास और एक राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है। महिला शिक्षा पर सरकार को जोर देना चाहिए। शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं है कि नारी शिक्षित होकर पुरुष को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खड़ी हो जाए। बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्राीपूर्ण सम्बन्ध के समीकर्ण बनाने में सक्षम बने। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न कुशल माता। समाज में बाल-अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है। अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं हो सकेगा। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षित नारी ही भविष्य में निराशा एवं शोषण के अन्धकार से निकलकर परिवार को सही राह दिखा सकती है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से संबंधित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्व मान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानो का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार था। मुगल काल में भी अनेक महिला विदुषियों का उल्लेख मिलता है। पुनर्जागरण के दौर में भारत में स्त्री शिक्षा को नए सिरे से महत्व मिलने लगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वार सन 1854 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर 0.2% से बदकर 6% तक पहुँच गया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। 1986 में शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिये, अधिक लड़कियों को पाठशाला में दाखिला करने के लिये और उनकी स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजनाएँ

बनाए हैं जैसे कि नि:शुल्क पुस्तकें, दोपहर की भोजन आदि। जोन इलियोट ने पहला महिला विश्वविद्यालय खोला था। सन् 1849 में और उस विश्वविद्यालय क नाम बीथुने कालेज था। सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पुनर्गठन देने को सरकार ने फैसला किया। सरकार ने राज्य कि उन्नती की लिये, लोकतंत्र की लिये और महिलाओं का स्थिति को सुधारने की लिये महिलाओं को शिक्षा देना ज़रूरी समझा था। भारत की स्वतंत्रता के बाद सन् 1947 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग को बनाया गया। आयोग ने सिफारिश किया कि महिलाओं कि शिक्षा में गुणवता में सुधार लिया जाए। भारत सरकार ने तुरन्त ही महिला साक्षारता की लिये साक्षर भारत मिशन की शुरूआत किया था। इस मिशन में महिलाओं की अशिक्षा की दर को नीचे लाने की कोशिश की गई है। बुनियादी शिक्षा उन्हें अनिवार्य है और अपने स्वयं के जीवन और शरीर पर फैसला करने का अधिकार देने, बुनियादी स्वास्थ्य, पोषण और परिवार नियोजन की समझ के साथ लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा प्रदान हो रही है।

लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा गरीबी पर काबू पाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। कुछ परिवारों का काम कर रहे पुरुष दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाओं में विकलांग हो जाते हैं। उस स्थिति में, परिवार का पूरा बोझ परिवारों की महिलाओं पर टिका रहता है। महिलाओं की ऐसी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उन्हे शिक्षित किया जाना चाहिए। वे विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर सकती हैं। महिलाएँ शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों और प्रशासक के रूप में काम कर रही हैं। शिक्षित महिलाएँ अच्छी माँ बन सकती हैं। महिलाओं की शिक्षा से दहेज समस्या, बेरोज़गारी की समस्या, आदि सामाजिक शांति से जुड़े मामलों को आसानी से हल किया जा सकता है।

स्त्री शिक्षा स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से संबंधित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानो का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की ग्रामीण विवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की शहरी विवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की ग्रामीण व शहरी विवाहित महिलाओं की शैक्षिक समस्याओ के सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की ग्रामीण विवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

2. उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की शहरी विवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. उच्च शिक्षा में स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर की ग्रामीण एवं शहरी विवाहित महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं में सार्थक सम्बन्ध नहीं होगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन इलाहाबाद जिले में स्थिति महाविद्यालय के उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाली विवाहित महिलाओ की शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन उचित एवं सुनिश्चित निर्देशक क्षेत्र में सर्वे विधि के द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में ग्रामीण व शहरी के 4 विद्यालय मे 25-25 विवाहित महिलाएं कुल 100 महिलाओं पर किया गया है। उपकरण अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इस प्रश्नावली में स्त्री उच्च शिक्षा के प्रति समस्याओं को समझने हेतु 40 कथन रखे गये हैं

जिसमें कुल कथन सकारात्मक तथा कुछ कथन नकारात्मक हैं। भविष्य के दृष्टिकोण से सम्बन्धित समस्याएँ सांख्यिकी विधि समस्या का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिये अध्ययनकर्ता ने प्रतिशतीय विश्लेषण माध्यम का प्रयोग किया गया है।

आर्थिक से सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण

आर्थिक समस्या	ग्रामीण	शहरी
आर्थिक कारण	78	48
पैसों को लेकर चिन्तित	98	52
निर्धनता	56	24
आर्थिक समस्या के कारण	68	32
शिक्षण सामग्री उपलब्ध	38	78
शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक कार्य	6	18

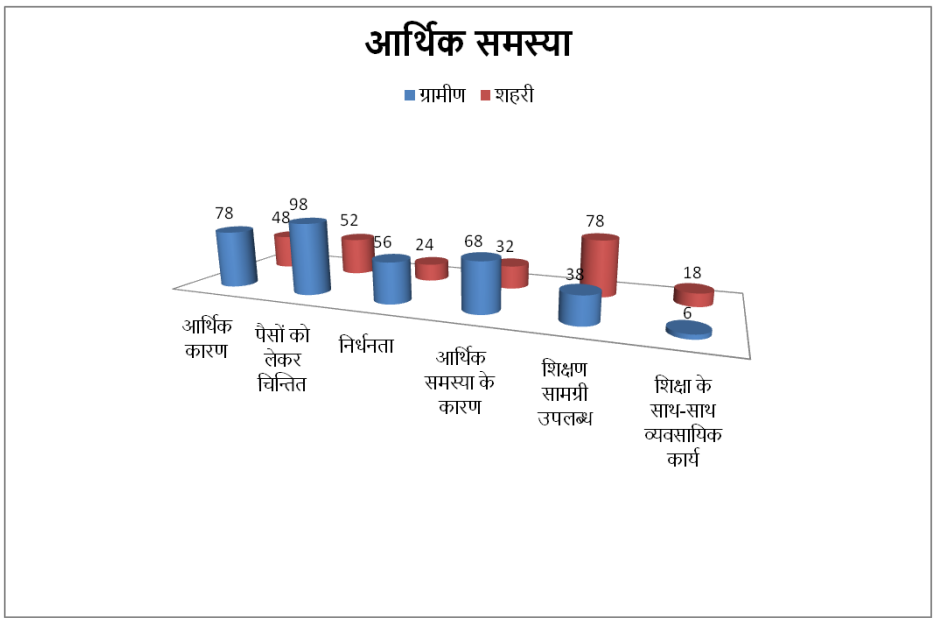

• 48% शहरी एवं 78% ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक कारण से उच्च शिक्षा में परेशानी होती है।

• 52% शहरी एवं 98% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाएँ पैसों को लेकर चिन्तित रहती है।

• 24% शहरी एवं 56% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को निर्धनता उनकी शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है।

• 32% शहरी एवं 68% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक समस्या के कारण उच्च शिक्षा में परेशानी होती है।

• 78% शहरी एवं 38% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को शिक्षण सामग्री उपलब्ध हो पाती है।

• 18% शहरी एवं 6% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाएँ शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक कार्य करती है।

• 14% शहरी एवं 32% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं में उच्च शिक्षा पर धन खर्च होने पर हीन भावना महसूस होती है।

सामाजिक सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण

सामाजिक समस्या	ग्रामीण	शहरी
समाज की रूढ़िवादी बातों	82	54
समाज की आलोचनात्मक टिप्पणी	94	58
सामाजिक दायित्व	70	32
पर्दा प्रथा	76	22
जातिवाद	22	8
परम्परागत एवं धार्मिक रीति-रिवाज	82	50

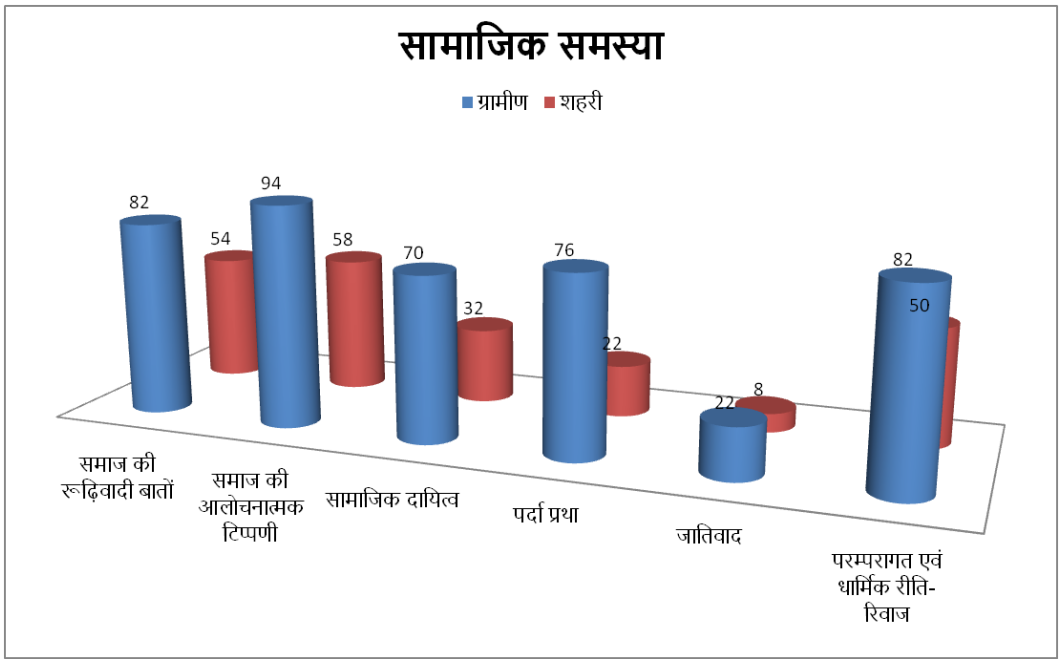

- 54% शहरी एवं 82% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाएँ समाज की रूढ़िवादी बातों को ध्यान देती है।
- 58% शहरी एवं 94% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाएँ समाज की आलोचनात्मक टिप्पणी के बारे में सोचती है।
- 32% शहरी एवं 70% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक दायित्व उनकी शिक्षा को बाधित करती है।
- 22% शहरी एवं 76% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को पर्दा प्रथा के कारण उनकी शिक्षा में परेशानी होती है।
- 8% शहरी एवं 22% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाएँ जातिवाद के बारे में सोचती है।
- 50% शहरी एवं 82% उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण महिलाओं को परम्परागत एवं धार्मिक रीति-रिवाज आपको परेशान करती है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्षतः पाया गया कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही विवाहित ग्रामीण महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा उच्च पारिवारिक समस्याएँ पायी गयी। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही विवाहित ग्रामीण महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा उच्च

आर्थिक समस्याएँ पायी गयी। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही विवाहित ग्रामीण महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा उच्च सामाजिक समस्याएँ पायी गयी। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही विवाहित ग्रामीण महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा उच्च विद्यालयी समस्याएँ पायी गयी। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही विवाहित ग्रामीण महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा उच्च व्यक्तिगत समस्याएँ पायी गयी।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. वासुकि, एन0 (1990), एट्रियूड्स ऑफ ओमेन टुवर्ड्स ओमेन्स एजुकेशन, एम0फिल0 एजुकेशन, कोयम्बटुर।
2. सोनकर, मनोज (2006), प्राचीन एवं मध्यकाल की स्त्री शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, एम0एड0, झाँसी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय।
3. सर्व शिक्षा अभियान (2001), परियोजना, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार।
4. सिंह, कर्ण, (2008), भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, लखीमपुर खीरी, गोविन्द प्रकाशन।
5. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप, (2006), शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन।
6. स्वामी, एस0 श्रीधर (2007), पॉपुलेशन एण्ड डेवलपमेन्ट एजुकेशन, नई दिल्लीः नीलकमल पब्लिकेशन, संस्करण I
7. श्रीवास्तव, अल्का (2011), हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म में स्त्री शिक्षा की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।